## TS Jatai – TS 6.1 Sanskrit Corrections – Observed till 31st May 2025 (ignore those which are already incorporated in your book's version and date)

As Printed	To be read as or corrected as
(3)[P30] 6.1.4.6(3)— रक्षोहा । अग्ने ।	(3)[P30] 6.1.4.6(3)— रक्षोहा । अग्ने ।
रक्षोहा <mark>उग्ने अ</mark> ग्ने रक्षोहा रक्षोहा उग्ने ।	रक्षोहा <mark>उग्ने उ</mark> ग्ने रक्षोहा रक्षोहा उग्ने ।
((23)[P34] 6.1.5.1(21)— सम् । अद् <mark>ध्र</mark> यन्त ।	(23)[P34] 6.1.5.1(21)— सम् । अद्धियन्त ।
स मद् <mark>ध्र</mark> यन्ता द् <mark>ध्र</mark> यन्त स(ग्म्) स मद् <mark>ध्र</mark> यन्त ।	स मद्धियन्ता द्धियन्त स(ग्म्) स मद्धियन्त ।
(24)[P34] 6.1.5.1(22)- अद् <mark>ध्र</mark> यन्त । त्वया ।	(24)[P34] 6.1.5.1(22)— अद् <mark>धियन्त । त्वया ।</mark>
अ <mark>द्ध्रय</mark> न्त त्वया त्वया ऽद् <mark>ध्र</mark> यन्ता द् <mark>ध्र</mark> यन्त त्वया ।	॥ = । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ अद्धियन्त त्वया । ॥ अद्धियन्त त्वया । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

\_\_\_\_\_

TO lotal TO CA Canalinit Compations which to 20th Can 2000

## TS Jatai – TS 6.1 Sanskrit Corrections – prior to 30th Sep 2023 (ignore those which are already incorporated in your book's version and date)

Section, Paragraph Reference	As Printed	To be read as or corrected as
None	None	None

\_\_\_\_\_